सम्पादकीय

भारत में समाजशास्त्र की स्थापना लगभग 101 वर्ष पूर्व मुंबई में पैटरिक गिडिस द्वारा की गयी थी। लगभग उसी समय कलकत्ता तथा लखनऊ विश्वविद्यालयों में भी समाजशास्त्र का प्रारम्भ हुआ। धीरे–धीरे इसका प्रसार अन्य राज्यों में भी होने लगा। फिर भी इसका क्षेत्र अन्य विषयों की तुलना में सीमित ही रहा। स्वतन्त्रता के पश्चात भारत सरकार ने इसके महत्व को स्वीकार किया तथा इसका पठन–पाठन स्नातक स्तर तक फैल गया। शीघ्र ही इसका अध्ययन हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी किया जाने लगा। देश के उत्तरी राज्यों में हिन्दी भाषा में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की एक बड़ी संख्या रही है। यहां तक कि अब शोध कार्य भी हिन्दी में किया जाने लगा है परन्तु हिन्दी भाषा में प्रमाणिक सामग्री के अभाव से समाजशास्त्र के विद्यार्थियों व अध्यापकों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। शोध के स्तर पर अभी भी प्रमाणिक शोध पत्रिकाओं व लेखों का भारी अभाव दिखायी देता है। इन सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए समाजशास्त्र में एक ऐसी शोध पत्रिका प्रारम्भ करने का निर्णय किया गया जो स्नातक से लेकर शोध स्तर तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं अध्यापकों की पठन–पाठन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। यह प्रयास 'नवरचना' के रुप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। 'नवरचना' विशुद्व रुप से प्रमाणिक शोध लेखों, पुस्तक समीक्षा, संवाद, साक्षात्कार के साथ–साथ प्रोफेशन में हो रही गतिविधियों का विवरण भी अपने पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास करेगी। इस अकादमिक कार्य में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

धन्यवाद सहित,

वी. पी. सिंह
सम्पादक